Ancient Vedic Mantras and Rituals

Shrimad Bhagavad Gita Chapter–3 Shalok–39 | श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय तीन–श्लोक उनतालीस | PDF

अध्याय 3 – कर्म योग
श्लोक 39
आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा ।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च ॥39॥
सरल हिंदी में भावार्थ

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं–

हे कौन्तेय (अर्जुन)! यह कभी तृप्त न होने वाली अग्नि के समान काम (इच्छा) मनुष्य के ज्ञान को ढक देती है। यह ज्ञानी पुरुष का भी नित्य शत्रु है, क्योंकि यह कभी संतुष्ट नहीं होता और निरंतर बढ़ता रहता है।

विस्तृत व्याख्या

ज्ञान पर काम का स्थायी आवरण

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं कि काम (अनियंत्रित इच्छा) केवल सामान्य मनुष्य को ही नहीं, बल्कि ज्ञानी व्यक्ति के ज्ञान को भी ढक सकता है।

जब तक इच्छाओं पर नियंत्रण नहीं होता, तब तक विवेक और आत्मज्ञान पूर्ण रूप से प्रकट नहीं हो पाते।

इसी कारण भगवान काम को मनुष्य का "नित्य वैरी" अर्थात् सदैव साथ रहने वाला शत्रु कहते हैं।

काम – कभी न भरने वाली अग्नि

भगवान काम की तुलना ऐसी अग्नि से करते हैं जो कभी संतुष्ट नहीं होती।

जैसे अग्नि में जितना अधिक ईंधन डाला जाता है, वह उतनी ही अधिक प्रज्वलित होती जाती है।

उसी प्रकार इच्छाएँ पूरी होने पर समाप्त नहीं होतीं, बल्कि नई इच्छाओं को जन्म देती हैं।

इसी कारण मनुष्य निरंतर असंतोष और अशांति का अनुभव करता है।

ज्ञानी भी सावधान रहें

भगवान विशेष रूप से बताते हैं कि ज्ञान प्राप्त कर लेने मात्र से मनुष्य पूरी तरह सुरक्षित नहीं हो जाता।

यदि मन में सूक्ष्म इच्छाएँ और आसक्तियाँ बनी रहें, तो वे धीरे-धीरे ज्ञान को ढक सकती हैं।

इसलिए आत्मसंयम, सतर्कता और निरंतर साधना प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक हैं।

काम का मन और बुद्धि पर प्रभाव

काम मनुष्य की सोच, निर्णय और व्यवहार को प्रभावित करता है।

जब इच्छाएँ अत्यधिक बढ़ जाती हैं, तब मनुष्य सत्य और असत्य का सही निर्णय नहीं कर पाता।

असफल इच्छा क्रोध को जन्म देती है और क्रोध विवेक को नष्ट कर देता है।

इसी प्रकार काम आध्यात्मिक उन्नति में सबसे बड़ी बाधा बन जाता है।

कर्मयोग की दृष्टि

कर्मयोग सिखाता है कि इच्छाओं का पूर्ण त्याग नहीं, बल्कि उनका शुद्धिकरण आवश्यक है।

जब मनुष्य अपने सभी कर्म ईश्वर को समर्पित करके निष्काम भाव से करता है, तब धीरे-धीरे काम का प्रभाव कम होने लगता है।

भक्ति, ध्यान, आत्मसंयम और सत्कर्म के द्वारा मन शुद्ध होता है और ज्ञान पुनः प्रकाशित होने लगता है।

मुख्य बिंदु

- काम ज्ञान को ढक देता है।
- यह ज्ञानी व्यक्ति का भी नित्य शत्रु है।

- काम कभी संतुष्ट नहीं होता।
- इच्छाएँ अग्नि की तरह निरंतर बढ़ती रहती हैं।
- काम विवेक और आत्मज्ञान को कमजोर करता है।
- निष्काम कर्म, भक्ति और आत्मसंयम से इच्छाओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है।
- मन की शुद्धि से ज्ञान पुनः प्रकाशित होता है।

गूढ़ आध्यात्मिक अर्थ

यह श्लोक सिखाता है कि मनुष्य का वास्तविक संघर्ष बाहरी परिस्थितियों से अधिक अपने भीतर की इच्छाओं से है।

काम आत्मा के प्रकाश पर ऐसा आवरण डाल देता है कि ज्ञानी व्यक्ति भी यदि सावधान न रहे तो मोह और आसक्ति में पड़ सकता है।

भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं कि निष्काम कर्म, ईश्वर-भक्ति, आत्मसंयम और निरंतर साधना के द्वारा इस नित्य शत्रु पर विजय प्राप्त की जा सकती है। तभी आत्मज्ञान पूर्ण रूप से प्रकट होता है और मनुष्य शांति, आत्मशुद्धि तथा मोक्ष की ओर अग्रसर होता है।

पदों का भावार्थ

आवृतम् – ढका हुआ

ज्ञानम् – ज्ञान

एतेन – इस (काम) से

ज्ञानिनः – ज्ञानी पुरुष का

नित्यवैरिणा – सदा रहने वाले शत्रु द्वारा

कामरूपेण – काम (इच्छा) के रूप में

कौन्तेय – हे कुन्तीपुत्र अर्जुन

दुष्पूरेण – जो कभी तृप्त नहीं होता

अनलेन – अग्नि के समान

च – और

श्लोक का संदेश

भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं कि काम (अनियंत्रित इच्छा) मनुष्य के ज्ञान को ढकने वाला उसका सबसे बड़ा और सदा साथ रहने वाला शत्रु है। यह अग्नि के समान कभी संतुष्ट नहीं होता और निरंतर नई इच्छाओं को जन्म देता है। निष्काम कर्म, भक्ति, आत्मसंयम और आध्यात्मिक साधना के द्वारा इस आंतरिक शत्रु पर विजय प्राप्त की जा सकती है। तभी ज्ञान का प्रकाश प्रकट होता है और मनुष्य आत्मिक शांति, आत्मज्ञान तथा अंततः मोक्ष की प्राप्ति करता है।

RELATED ARTICLE

Chapter–3 Shalok–37

Chapter–3 Shalok–38

THANKS FOR READING

READ MORE RELIGIOUS CONTENT ON

vedicprayers.com

VEDIC PRAYERS